UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 168-170

"महिला सशक्तिकरण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में"

डॉ. श्रीमती शिवा खण्डेलवाल
सहायक प्राध्यापक – इतिहास
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर

सारांश

'मातृदेवो भव' *के अनुपम उद्घोष से अनुप्राणित हमारी भरतीय संस्कृति में महिलाओं का अत्यंत गौरवशाली स्थान रहा है।* ***'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'*** *कह कर भगवान मनु ने उनके गौरव को और भी बढ़ा दिया है। महिलाओं की स्थिति ही देश के स्वरूप को निश्चित करती है – इस कथन का आशय यह है कि यदि देश की महिलाओं की स्थिति अच्छी है तो यह माना जाता है कि उस देश की स्थिति भी अच्छी होगी। इसी सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि, ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की सशक्त महिलाओं की स्थिति।''[1] महिला सशक्तिकरण की दिशा में उच्च शिक्षा ने महिलाओं के स्तर को दिन प्रतिदिन उन्नति के शिखर की ओर ले जाने का कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारतीय नारी अबला से सबला बन गई है। कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं ने प्रखरता और प्रबलता से अपना अस्तित्व स्थापित नहीं किया।*

शब्द कुँजी– *थर्मामीटर – तापमापक यन्त्र, मातृसत्तात्मक – माता की सत्ता का होना। अग्रित – आगे होना, प्रयासत् – कोशिश कर रही हैं।*

किसी भी राष्ट्र व समाज का सर्वांगीण विकास तभी सम्भव होगा जब उसमें महिलाओं का योगदान बराबरी का होगा। महिलाओं ने देश की समृद्धि और विकास और उसकी प्रगति में अमूल्य योगदान देकर पुरूष प्रधान इस देश में पुरूषों से अग्रित होने का संकेत दिया है। इतिहास भी इस बात का साक्षी है, जैसे– धार्मिक क्षेत्र में सीता–राम, गौरी–शंकर व राधा–कृष्ण का नाम लिया जाता है। जो बात इतिहास में पूर्ववत् मन्जूर है, वह आज के युग में क्यों नहीं? भारत का अतीत भी इस बात का साक्षी है कि विलक्षण प्रतिभा, बुद्धि व त्याग से भारतीय नारी ने राष्ट्र–निर्माण में महती भूमिका निभाई है। उसने उर्वशी, सावित्री कैकेयी, दमयन्ती के रूप में अजेय शत्रु, विजयिनी, सहस्त्र वीर्या आदि संबोधनों को सार्थक किया है। सीता, गंगा, शकुंतला और सुनीति के रूप में विषम परिस्थितियों में भी लव–कुश, भीष्म, भारत और ध्रुव का निर्माण किया।

महिला सशक्तिकरण के संबंध में जब हम इतिहास के पन्ने उलटते हैं तो सिन्धु घाटी की सभ्यता के समाज के अध्ययन से पता चलता है कि उस काल में समाज मातृ सत्तात्मक था। महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से वैदिक काल को हम स्वर्णिम काल कह सकते हैं।[2] ऋग्वेद के एक मन्त्र में नारी को सबला रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि, वह गृह–स्वामिनी सबको अपने सौहाद्र से वश में करने वाली तथा विदथ (युद्ध तथा यज्ञ) में बोलने वाली है। श्रीराम जी उपाध्याय का कथन है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वैदिक आर्यों के बीच नारियों की स्थिति इतनी ऊँची थी कि वर्तमान में संसार का अधिक से अधिक सुसंस्कृत राष्ट भी यह दावा नहीं कर सकता कि उसने नारी को इतना ऊँचा स्थान प्रदान किया है।[3] गार्गी, मैत्रेयी, अरून्धति, मातंगी, सुलभा कात्यायिनी आदि अनेक उल्लेखनीय महिलाएँ थीं जो विदुषी, ज्ञानी तथा वेदों में पारंगत होने से सभा में शास्त्रार्थ करती थीं।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 168-170

बृहदारण्यकोपनिषद् में गार्गी के याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ करने का वर्णन है। उपनिषदों में नारी को पुरूषों के समान ही श्रेष्ठता दी गई है। यजुर्वेद के अनुसार राजनैतिक अधिकारों के परिप्रेक्ष्य में स्त्रियाँ न्यायाधीश का कार्य करने वाली युद्ध में पति का साथ देने वाली तथा युद्ध के अश्वों को शिक्षण देने वाली आदि रूपों में दृष्टिगोचर होती हैं। वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ पंडित श्री पाद दामोदर सातवलेकर ने लिखा है, प्राचीन काल में जिस प्रकार वीर पुरूषों के नाम प्रसिद्ध थे उसी प्रकार वीर स्त्रियों के नाम भी सुनने में आते हैं। काली, भवानी, अम्बिका, एकवीरा आदि सैंकड़ों देवियाँ अपनी शूरवीरता के कारण पूज्य हो गई है। पुरूष देहधारी सभी देवता प्रायः शस्त्रधारी हैं लेकिन हिन्दुओं की देवियों ने पुरूषों से भी अधिक आयुध धारण किये हैं।''[4] अर्थात् प्राचीन काल में स्त्रियाँ आत्मरक्षा में सक्षम होने के साथ–साथ राष्ट्र रक्षा में भी पुरूषों के साथ कन्ध से कन्धा मिला कर कार्य करती थीं।

मध्यकाल में भी 1236 ई. में सुल्तान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों के स्थान पर योग्यता के आधार पर अपनी पुत्री रजिया को शासन सौंपा। इस प्रकार रजिया सुल्ताना बनी। इसी प्रकार माहम अनगा ने (1560–1564 ई.) तक पार्श्व में शासन का संचालन करते हुए राज्य पर प्रभुत्व स्थापित किया। साहित्यिक क्षेत्र में हुमायूं की बहिन गुलबदन बेगम ने हुमायूंनामा ग्रंथ लिखा, जो मध्यकालीन इतिहास जानने का प्रमुख स्त्रात है।

इसी प्रकार मुगल सम्राट जहाँगीर के शासन काल म नूरजहाँ ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया जिसके बारे में डॉ. बेनीप्रसाद ने लिखा है कि पूरे पन्द्रह वर्षों तक इस सुप्रसिद्ध महिला ने मुगल साम्राज्य में अत्यंत शक्तिशाली बन कर शासन किया।[5] नूरजहाँ ने अपनी रणकुशलता का परिचय उस समय दिया जब जहाँगीर महावतखां की कैद में था। उसने हाथी पर सवार होकर, हाथ में तलवार लेकर सेना का नेतृत्व कर जहाँगीर को मुक्त कराया।

अहमदनगर में चाँद बीबी व गढ़ा गोंडवाना में रानी दुर्गावती ने शासन किया। शिवाजी की आगरा यात्रा के दौरान् उनके राज्य की बागडोर माता जीजाबाई ने संभाली। चित्तौड़ की रानी पद्मावती राजपूत वीरांगना थीं जिन्होंने अपने पति रतनसिंह को अलाउद्दीन खिलजी की कैद से मुक्त कराया। इसी प्रकार मराठा नरेश राजाराम की विधवा पत्नी ताराबाई मोहिते ने अपने पुत्र शिवाजी द्वितीय की संरक्षिका के रूप में शासन किया। इन्दौर महेश्वर की अहिल्याबाई होलकर भी शासिका के रूप में इतिहास प्रसिद्ध रही हैं।

आधुनिक काल में राजनीति का क्षेत्र हो या विज्ञान का, खेल का मैदान हो या रोजगार का, लेखन जगत् की बात हो या पत्रकारिता की महिलाएँ हर क्षेत्र में अग्रणी हैं। यहाँ तक कि पुरूष एकाधिकार वाले क्षेत्र, आई.टी. इंडस्ट्री, बी.पी.ओ., चिकित्सा प्रशासन व्यवसाय आदि क्षेत्रों में उन्होंने अपनी विजय पताका फहराई है।

आज अवसर आने पर भारतीय नारी, जैसे सरोजनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, इन्दिरा गांधी, सुषमा स्वराज, वसुंधरा राजे, लक्ष्मी सहगल, सुचेता कृपलानी, कमला नेहरू, महामहिम प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, सोनिया गांधी एवपं सुमित्रा महाजन जैसी सुशिक्षित महिलाओं ने राजनीति के क्षेत्र में दस्तक दी व महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी व राष्ट्रपति महामहिम प्रतिभा पाटिल ने तो वह सब कर दिखाया जो हजारों वर्षों के इतिहास में कभी देखने को नहीं मिला। वहीं महादेवी वर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, शिवानी, कृष्णा सोबती जैसी महिलाओं ने साहित्यिक क्षेत्र में अपने झण्डे गाड़ दिये। आज हजारों महिलाएँ देश की सीमा पर राइफल लिए पहरेदारी करते देखी जा सकती हैं। आज आसमान से लेकर समुद्र की गहराईयों तक महिलाओं की पहुँच हैं। कल्पना चावला तथा सुनीता विलियम्स जैसी महिलाओं ने अंतरिक्ष में कदम रख दिए हैं।

साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, जैसी महिला खिलाड़ियों ने विश्व स्तर पर अपना परचम लहरा दिया है। अन्टार्कटिका ज्वालामुखी की खोज, पर्वताराहण, रोप्टिंग सेना तथा प्रबंधन जैसे जटिल एवं साहसपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की अद्भुत भागीदारी बढ़ रही हे। महिलाओं ने किरण बेदी के रूप में अपराधियों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया है। बछेन्द्री पाल और सन्तोष यादव तथा कृष्णा पाटिल के रूप में एवरेस्ट की चोटी पर कदम रखे। मेघा पाटकर के रूप में स्वतन्त्र समस्याओं के प्रति जनजागरण किया। सफल बजाज

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 168-170

के रूप में सफेद पोशों की विकृत मानसिकता को उजागर किया। सोनल मानसिंह, गिरिजा देवी, लता मंगेशकर के रूप में भारतीय कला की उत्कृष्टता को विश्व के पटल पर सिद्ध किया।

आज आशाओं के दीप जलाए महिलाएँ नित नई ऊँचाईयों को छू रही है। और इसी बड़ी–सी दुनिया में अपनी जगह बनाने को निरन्तर प्रयासरत् हैं। तमाम विरोधाभासों, भेद भाव और विडम्बनाओं के बावजूद महिलाएँ आज हर क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही ह। संघर्ष से, सफलता तक के मुश्किल रास्ते लगातार तय कर रही हैं। इन्हीं मेहनतकश और जुझारू महिलाओं के बलबूतें पर हम गर्व से कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी महिलाओं की है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1. वर्मा डॉ. कीर्ति एवं त्यागी पूजा – सभ्यता के प्रारंभ से आधुनिक समय तक नारी, पृ. 33, लेख ओमेगा पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली।
2. रावत डॉ. मीरा – वैदिक साहित्य में नारी सशक्तिकरण वर्तमान सन्दर्भ में, पृ. 12, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. यादव डॉ. पुष्पा विद्यालंकार – महिला हिंसा वैदिक युग में वर्तमान तक, पृ. 253, ... ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. यादव डॉ. वीरेन्द्रसिंह – नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तिकरण, पृ. 104, आगर, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. खुराना के.एल. – जहाँगीर, पृ. 63, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल एण्ड सन्स।